कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (3) खण्ड -(5)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं (1)- कर्म में योग का अनुभव होना अर्थात्

A योगयुक्त

B राजयोगी

C कर्मयोगी

D- उपरोक्त सभी

---

*प्रश्न सं (2)- शिव बाबा द्वारा मुरलियों में सुनाये हुए ज्ञान को क्या कह सकते हैं?

A-सच्ची अमरकथा

B-तीजरी की कथा

C-तीसरा नेत्र मिलने की कथा

D-A,B और C

E- A और B

---

*प्रश्न सं (3)- विजय माला के बारे में सही महावाक्य पहचानिए।

A-तुम अब विजय माला में पिरोने का पुरूषार्थ कर रहे हो ?

B-विजय माला 8 रत्नों की ही होती है।

C-सबसे ऊपर में है शिवबाबा फूल, फिर है जगत अम्बा, जगत पिता और उनकी 108 वंशावली।

D- A और C

---

*प्रश्न सं (4)- कौन सी बहुत अच्छी हिम्मत है?

A-पास होने के लिए मां-बाप

समान बनना है।

B-हम मात-पिता को फालो कर गद्दी पर बैठेंगे।

C-हम तो पूरा इम्तहान पास करेंगे।

D-हम अथक सेवाधारी बनेंगे।

---

*प्रश्न सं- (5) शिवबाबा नहीं है ?

A-त्रिमूर्ति ।

B-एक ओंकार ।

C-मास्टर सर्वशक्तिमान।

D-A और C

E-A और B

---

*प्रश्न सं- (6) शिवबाबा किसको नॉलेज सुनाते हैं सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त की ?

A-जीते जी मरकर अमरलोक में

चलने वालों को ।

B-एडाप्टेड चिल्ड्रेन को ।

C-जो गाते हैं - तुम मात-पिता उन

सबको।

D- A और B।

E-A,B और C

---

*प्रश्न सं- (7) तुम समझते हो शिव- बाबा हमारा सच्चा-सच्चा बाप है, जिससे किसका वर्सा मिलता है?

A- पवित्रता

B- सचखण्ड

C- परमधाम

D- A,B,C

E- A और B

प्रश्न सं -(8) बाप से कौन सी आशायें नहीं रखनी हैं ?

A-एक बाप की याद में रहना है

B- दो रोटी मिली, पेट भरा, बस

C-साक्षात्कार हो

D-आश कोई भी नहीं रखो, सिवाए बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने।

E- C और D

खण्ड -5 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

---

*उत्तर -1-C कर्मयोगी

कर्म करते हुए अर्थात् चलते-फिरते -उठते, खाते-पीते, स्नानादि करते हुए भी एक बाप को याद करना। वहीं राजयोग का अर्थ -जिससे आत्मा केवल परमात्मा की याद द्वारा अपने स्वयं के इन्द्रियों (कर्मेन्द्रियों, मन, बुद्धि) का मास्टर अथवा राजा बन जाती है।जो बन्धनमुक्त होगा वह सदैव योगयुक्त होगा। बन्धनमुक्त की निशानी है योगयुक्त। और, जो योगी होगा, ऐसे योगी का मुख्य गुण कौनसा दिखाई देगा?इस तरह योग की 3 स्थितियों में बाप की याद रहती है।परन्तु सूक्ष्म अन्तर है।हम ब्रह्मावत्स राजयोगी। कर्म करते हुये बाप की याद बनी रहती है।पर योगयुक्त स्थिति सर्वश्रेष्ठ है।

---

*उत्तर सं-2 (E) सच्ची अमरकथा और तीजरी की कथा।

शिवबाबा ने मुरलियों में सुनाये हुए ज्ञान को तीन कथा से जोड़कर मुरलियों में ही वर्णन किया है। इस सम्बन्ध में महावाक्य है-हम आत्माएँ, मनमनाभव की स्थिति में तीजरी की कथा, सच्ची सच्ची, सत्य नारायण की कथा और अमर कथा सुनाकर सबकी सच्ची उन्नति करनेवाले, नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनानेवाले, अमरलोक के रहवासी हैं..।अमर बाबा आया है। तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र देने आये हैं। महावाक्यों में यह कथा रूप में वर्णित न होने के कारण प्रश्न में दिये दो विकल्प सच्ची अमरकथा और तीजरी की कथा सही उत्तर है।

---

*उत्तर सं 3- (D) विजय माला 8 रत्नों की ही होती है।

कोई तो विजय माला के 8 दानों में आते हैं, कोई 108 में, कोई 16108 में।तुम बच्चे अब विजय माला में पिरोने का पुरूषार्थ कर रहे हो। महावाक्य अनुसार- 8 विजय माला के दाने बनते हैं। इसमें भी एक तो है मम्मा कुमारी और यह फिर है बूढ़ा ब्रह्ममम्मा-बाबा हैं शिवबाबा के मुरब्बी बच्चे। हम उनको पूरा फालो कर गद्दी पर बैठेंगे। बाबा। पर अष्टरतन सर्वश्रेष्ठ

विजयमाला के दाने होते हुए भी 108 और 16108 की विजयमाला होने से विकल्प B गलत और D सही।

---

*उत्तर सं 4- (B)हम मात-पिता को फालो कर गद्दी पर बैठेंगे।

सबसे अच्छी हिम्मत मम्मा-बाबा शिवबाबा के मुरब्बी बच्चे हैं, हम उनको पूरा फालो कर गद्दी पर बैठेंगे। जबकि अन्य हिम्मत भी जैसे क्रमशः मां बाप समान बनना,सभी ज्ञान,योग,धारणा, सेवा इम्तहान में पास होना,अथक सेवाधारी बनना भी हिम्मतवान बच्चों की निशानी है। पर माता पिता को पूरा फालो कर सुखधाम में गद्दीनशीन बनना सर्वोच्च हिम्मत है।

---

*उत्तर 5-D त्रिमूर्ति और मास्टर सर्वशक्तिमान।

त्रिमूर्ति में ब्रह्म, विष्णु और शंकर सूक्ष्म वतन वासी देवता हैं। शंकर को ऊंच नहीं रखते। ऊंच त्रिमूर्ति ब्रह्मा को रखते हैं। जैसे रचता शिव परमात्मा को कहते हैं, बाकी रचना होती है ब्रह्मा द्वारा। *तीनों मूर्तियों (सूक्ष्म देवों)की रचना करने के कारण त्रिमूर्ति बाप या त्रिमूर्ति भी कहते है*।ओंकार का अर्थ परम शक्ति/शिव बाबा से है । हम सभी सर्वशक्तिमान शिव बाबा की सन्तान मास्टर

सर्वशक्तिमान हैं, मास्टर बच्चे को कहते हैं। अतः विकल्प D सही है।

उत्तर 6-D, A और B दोनो विकल्प

भक्ति मार्ग में यह गीत सदा गाते आये- तुम मात-पिता हम बालक तेरे,पर संगम पर ब्रह्मामुखवंशी बच्चों के अलावा और कोई सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान नहीं जानते। *सुखधाम में मृत्यु का नाम नहीं, यह है मृत्युलोक, वह है अमरलोक।* शिव बाबा संगमयुग पर जीते जी मरकर अर्थात् मरजीवा बनने वालों को सृष्टि चक्र का राज बताकर अमरलोक चलने का रास्ता बताते हैं ।शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा जिन बच्चों को एडॉप्ट करते हैं, उन्हें यह नॉलेज सुनाते हैं।बाबा कहते हैं यह ब्रह्मा माँ है। शिवबाबा ने ब्रह्मा माँ द्वारा तुमको एडाप्ट किया है। अभी तुम बाप के बने हो।

उत्तर सं 7- B सचखण्ड

संगम पर पहली *श्रीमत ही पवित्रता* की मिलती है वो भी नंबरवार जिससे हम भविष्य 21जन्म के लिए सचखंड के वर्से के अधिकारी बनते हैं। *हम बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हैं। वर्सा तब

मिलेगा जब पवित्र बनेंगे।* वर्सा तो हमे स्वर्ग का ही मिलता है जहां *सुख, शान्ति और पवित्रता है ही।* इस तरह पवित्रता और सचखंड दोनों उतर सही हैं।परमधाम से जो कोई भी आत्मा पहले पहल आती है वो सतोप्रधान होती है।शिव बाबा से ज्ञान सुनकर वर्सा पाने वाली आत्मायें परमधाम वाया स्वर्ग में रहती है। वह 84 जन्म सुखधाम और दुखधाम में लेती है। अन्य धर्म की आत्मायें 2500 वर्ष बाद अपने अपने समय पर पार्ट बजाने आती हैं।अतएव सचखण्ड विकल्प सही है।

उत्तर सं 8- C साक्षात्कार हो।

शिव बाबा ज्ञान मुरलियों में बहुत सी आशा रखने को कहते हैं,जैसे बच्चे बाप को याद करें।बस दो रोटी मिले वह भी बहुत हैं। मनुष्य का पेट जास्ती नहीं खाता।। बच्चों को बाप कहते हैं - मीठे बच्चों आश कोई भी नहीं रखो, सिवाए बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने।यज्ञ स्थापना के समय बच्चों को बहुत साक्षात्कार हुए थे।पर बाबा ने कहा है बच्चों अन्त में तुम ब्राह्मणों को बहुत साक्षात्कार होंगे।साक्षात्कार की आश न रख, निश्चय से पुरुषार्थ करना है.. बीमारी आदि कुछ भी आए ।दूसरी मुरली से

साक्षात्कार आदि की आश न रख निश्चयबुद्धि बन पुरूषार्थ करना है।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (3) खण्ड -(6)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं (1) कौन सा देश प्यारा लगता है ?

A- निर्वाणधाम

B-साकार लोक

C-जहाँ जन्म लेते हैं वह

D-सूक्ष्म लोक

प्रश्न सं (2) एक ही कौन सा (सबसे बड़ा) पु.रूषार्थ करो ?

A-सदाकाल तख्तनशीन रहने का

B-मन्सा सेवा का

C-अनेक आत्माओं को मिलाने का

D-साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है।

प्रश्न सं- (3) पुरुषोत्तम संगम युग है डायमण्ड, सतयुग है गोल्ड, त्रेता है सिलवर....संगम युग डायमण्ड क्यों है ?

A-संगम पर ही हम मनुष्य से देवता बनते हैं।

B-यह हीरे जैसा जन्म है।

C-रूहानी फादर और रूहानी नॉलेज संगम पर ही मिलती है।

D -B और C

E-A,B और C

प्रश्न सं-(4) भारत सब खण्डों में श्रेष्ठ है क्यों ? -

A-भारत तो अविनाशी खण्ड है।

B-प्रलय भी नहीं होती है।

C-विनाश कभी नहीं होता।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं- (5) मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए मंत्र ?

A-मनमनाभव

B- मामेकम् याद करो

C- देह सहित देह के सब सम्बन्धों को

त्याग बाप को याद करो।"

D- A और B

E- A,B और C

प्रश्न सं -(6)-माया के खिलौने बड़े क्या हैं ?

A -लुभाने वाले

B- आकर्षण वाले

C- प्रभावित करने वाले

D-डर

प्रश्न सं (7)- सदा हर्षित रहना है तो विश्व ड्रामा की हर सीन को क्या होकर देखो ?

A- उपराम

B- ट्रस्टी

C-साक्षी

D-A और C दोनों

प्रश्न सं (8)-निश्चय से विजय पाते हो। संशय भूत से किसको पाते हो ?

A- दुर्भाग्य

B- हार।

C- विनाश

D-अनिश्चय

खण्ड -6 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1- A निर्वाणधाम

हम आत्मायें परमधाम, निर्वाण देश से आती हैं। परमधाम से दूर और कोई देश नहीं है।यहाँ आया हूँ तुम बच्चों का बुद्धियोग वहाँ लगाने के लिए। हे बच्चे, मुझे अपने परमधाम घर में याद करो। इसलिए इसे पियर घर और स्वीट होम कहते हैं।पियर घर सबसे प्यारा होता है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर अपनी-अपनी सूक्ष्म पुरियों में रहते हैं।इस लोक में जन्म-मरण या दुःख-सुख नहीं होता हैं और न ही ध्वनि होती हैं। यहाँ बोलते हैं पर आवाज़ नहीं होती। साकार लोक में हम सभी आत्माएं इस भौतिक शरीर को धारण कर कर्म करती हैं व दुःख-सुख का खेल करती हैं और इन्हीं के आधार पर फ़ल भोगती हैं।बाबा ने एक अव्यक्त मुरली में विदेश मे रहने वाले भारतवासियों के सन्दर्भ मे अवश्य कहा है स्वीट होम भारत में जाते हैं। जहाँ जन्म लेते हैं वह देश प्यारा लगता है। कहते हैं हमको स्वीट होम (भारत में) ले चलो। परन्तु सम्यक् श्रीमत् निर्वाणधाम को ही सही विकल्प सिद्ध करती है।

उत्तर सं 2- D साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है।

यहां तीनों पुरूषार्थ मनसा सेवा,आत्माओं को ज्ञान देना और सदा तख्तनशीन रहना श्रेष्ठ पुरुषार्थ हैं, परन्तु अव्यक्त मुरली अनुसार- साक्षीपन के तख्तनशीन आत्मा कभी भी कोई समस्या में परेशान नहीं हो सकती। समस्या तख्त के नीचे रह जायेगी और आप ऊपर तख्तनशीन होंगे।यहाँ सदाकाल तख्तनशीन नहीं होंगे तो वहाँ भी सदा अर्थात् जितना समय फुल है, उतना समय नहीं बैठ सकेंगे।एक ही पुरुषार्थ करो कि साक्षी और खुशनुमा तख्तनशीन रहना है। यह तख्त कभी नहीं छोड़ना है। ...

उत्तर 3-E A,B और C तीनो विकल्प सही।

पांचों युगों में सतयुग को गोल्डन युग कहा गया है।परन्तु संगमयुग को *डायमंड* अर्थात् हीरे जैसा जन्म कहा गया क्योंकि यहीं संगम पर ही हम मनुष्य से देवता बनते हैं। रूहानी परमपिता परमात्मा और उसका रूहानी ज्ञान हमें इस संगम पर प्राप्त होती है। इसलिए यहां *तीनों वाक्य सही होने से विकल्प E* सही है।

---

*उत्तर 4-D*उपरोक्त सभी

सिर्फ एक *भारत ही अविनाशी खण्ड* है, बाकी सब हैं विनाशी खण्ड।और सभी खण्डों का विनाश हो जाता है।जो भी खण्ड हैं उन सबमें भारत खण्ड सबसे बड़ा है। बाबा की जन्मभूमि है । बाकी जो इस समय खण्ड हैं वह सब खत्म हो जायेंगे। चारों युग में आत्मायें सतो रजो तमो अवस्था में रहती हैं।बाबा ने कहा प्रलय के सम्बन्ध में-शास्त्रों में तो टोटल विनाश लिख दिया है। परन्तु टोटल विनाश तो होना नहीं है, फिर तो प्रलय हो जाए। मनुष्य कोई भी न रहें सिर्फ 5 तत्व रह जाएं। ऐसे तो हो नहीं सकता। प्रलय हो जाए तो फिर मनुष्य कहाँ से आये । दिखाते हैं कृष्ण अंगूठा चूसता हुआ

पीपल के पत्ते पर सागर में आया। बालक ऐसे आ कैसे

सकता।

उत्तर सं 5 E* A ,B और C तीनो विकल्प सही।

मुक्ति - जीवन-मुक्ति मिलने के सम्बन्ध तीन मंत्रों का उल्लेख विविध मुरलियों में किया गया है।

1- *मनमनाभव* शब्दकोश अनुसार स्वयं को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो। मुरली अनुसार- तुम सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति पाने के पुरूषार्थी हो एक मनमनाभव के मंत्र के द्वारा।तुम मुक्ति जीवनमुक्ति पा लेंगे।...सभी को मनमनाभव का वशीकरण मंत्र सुनाना है।

2- *मामेकम् याद करो*-हे आत्मायें मामेकम् याद करो,दूसरा न कोई। सर्व धर्मानि परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज अहं त्वा सर्वपापोभ्यो मोक्षयिष्यामि।'सभी को सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए यही महामंत्र सुनाना है कि *_“सबको मंत्र मिलता है कि देह सहित देह के सब सम्बन्ध त्याग मामेकम् याद करो तो तुम मेरे पास आ जायेंगे।"_*

3- मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए मंत्र-सभी को सेकेण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार देने के लिए यही महामंत्र सुनाना है कि *_“देह सहित देह के सब सम्बन्धों को त्याग बाप को याद करो।"_*

उपरोक्त तीनों मंत्र का एक ही भाव है कि मुक्ति जीवन-मुक्ति के लिए स्वयं को आत्मा व सर्व सम्बन्धों को त्याग बाप की याद में रहना।

उत्तर सं 6- B* आकर्षण वाले

माया जीत बनना कोइ मासी का खेल नहीं हैं। अव्यक्त मुरली -सारे दिन में क्या क्या खेल करते हो - ये रात्रि को चेक करते हो ना? माया के खिलौने बड़े आकर्षण वाले हैं। तो उन खिलौनों से खेलने लग जाते हो। पहले तो बहुत प्यार से माया खेल कराती है और खेल कराते कराते जब हार खिलाती है तब होश में आते हैं। माया के खिलौने सांसारिक नश्वर वस्तुएं हमें सबसे ज्यादा आकर्षित करती है।वे लुभाती हैं और हम पर प्रभाव भी डालती है,तभी उनसे आकर्षित होते हैं।

उत्तर सं 7- D* उपराम और साक्षी।

साक्षी भाव का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी गतिविधियों को बिना किसी रुचि के दर्शक की तरह देखे. इसमें आत्मा और शरीर को अलग माना जाता है. इसमें व्यक्ति को तटस्थ रहकर दर्शक की भूमिका निभानी होती है।

उपराम का अर्थ है- न्यारापन,राम के समीप होना।योगयुक्त रहकर चित्त को सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से न्यारा हो जाना ही उपराम होना है।

उपराम वृति द्वारा साक्षी वा न्यारी स्तिथि में स्थित रह ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कर देखना है। बाबा कहते हैं- सदा उमंग उत्साह में रहने वाली आत्मा ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कर देखती है। ट्रस्टी स्थिति ड्रामा की हर सीन से सम्बन्धित नहीं है।

उत्तर सं 8- C* विनाश

निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति।निश्चय से सदा विजय मिलती है।बाबा कहते हैं-निश्चय से विजय पाते हो। संशय भूत से विनाश को पाते हो। संशय को भूत. कहा जाता; निश्चय को भूत नहीं कहा जाता।अपने में ही जरा सा संकल्पमात्र भी संशय आता है कि यह होगा या नहीं होगा, तो विजय नहीं होगी। अविवेकी संशय करता है, ऐसा होना दुर्भाग्य भी है,संशय में गलत निर्णय से हार भी होती है। संशय का पर्याय अनिश्चय है। परन्तु सबसे उपयुक्त उत्तर विनाश ही है।

-